

विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग -सप्तम्, विषय- हिंदी

दिनांक - 31 अगस्त 2020

Based on NCERT syllabus

॥ अध्ययन -सामग्री ॥

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कई कक्षाओं से लगातार हम आपके पाठ्य पुस्तक के पाठ 7 जिसका शीर्षक है- 'मेरी मां' जिस के रचनाकार हैं राम प्रसाद 'बिस्मिल' को लेकर उपस्थित हूं ।

अब तक आपने पढ़ा कि राम प्रसाद 'बिस्मिल' अपनी शिक्षा, अपने संस्कार, अपने अंदर देशभक्ति की भावना का सारा श्रेय अपनी मां को देते हैं ।

अब आगे.... महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर न होने दिया ।
सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी को सुनाते हुए मुझे सांत्वना देती रहीं । तुम्हारी
दया की छाया में मैंने अपने जीवन में कोई कष्ट ना अनुभव किया । इस
संसार में मेरी किसी भी भोग- विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं है । केवल
एक तृष्णा है । वह यह कि एक बार श्रद्धा पूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके
जीवन को सफल बना लेता । किंतु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती और
तुम्हें मेरी मृत्यु का दुखद संवाद सुनाया जाएगा । मां मुझे विश्वास है, तुम यह
समझ कर धैर्य करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता, भारत माता की सेवा
में अपने जीवन की बलिवेदी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारे कुल को
कलंकित ना किया ; अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ रहा । जब स्वाधीन भारत का
इतिहास लिखा जाएगा तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी
नाम लिखा जाएगा । गुरु गोविंद सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की
मृत्यु का संवाद सुना था तो बहुत हर्षित हुई और गुरु के नाम पर धर्म रक्षार्थ
अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई बांटी थी ।

जन्म दात्री ! वर दो कि अंतिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित ना
हो और तुम्हारे चरण कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ
शरीर त्याग करूं ।

अर्थ - यह पत्र राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी मां को उस समय लिखा जब उन्हें फांसी देने का आदेश आ चुका था । इस अनुच्छेद में दुश्मन कहते हैं कि हे मां ! तुम्हारे दिए गए संस्कार की वजह से मेरे अंदर किसी सांसारिक सुख की इच्छा बची नहीं है , ना ही कोई और इच्छा । सिर्फ एक इच्छा मन में थी कि तुम्हारी खूब सेवा करूं । शायद यह इच्छा पूरी नहीं हो पाएगी । लेकिन फिर भी मन संतुष्ट है कि मैं माताओं की माता मातृभूमि की सेवा करते हुए अपने प्राण को त्याग रहा हूं । जब तुम्हारे पास तुम्हारे पुत्र की मृत्यु की खबर जाएगी तो मुझे विश्वास है कि तुम बिल्कुल निराश और दुखी नहीं होगी । निश्चित ही गुरु गोविंद जी की पत्नी की तरह तुम्हारे हृदय में भी पुत्र की मृत्यु पर खुशी होगी कि तुम्हारा पुत्र मातृभूमि के लिए शहीद हो गया । बस अब यही इच्छा है कि बस तुम्हारे चरणों का ध्यान धरकर मैं शरीर का त्याग करूं ।

आज यह पाठ खत्म हो गया कल से हम इस पाठ से संबंधित प्रश्न उत्तर को पूरा करेंगे ।

गृहकार्य : राम प्रसाद बिस्मिल की कौन सी इच्छा शेष रह गई?

गुरु गोविंद सिंह की पत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु का समाचार सुना तो उनकी क्या प्रतिक्रिया थी ?

जब इतिहास लिखा जाएगा तो उज्ज्वल अक्षरों में लिखा जाएगा ?

बिस्मिल अपनी मां से कौन सा वरदान मांग रहे हैं?